

[श्री गिरधारी लाल ब्यस]

के लिए पैसा खर्च नहीं कर सकते, उनको कैसे सहायता दी जाए। लैण्ड रिफार्म के पीछे हमारा मुख्य ध्येय है गांवों के गरीब लोगों की सहायता करना। कांग्रेस का भी मुख्य ध्येय है कि लैण्ड रिफार्म कर के बड़े बड़े कुलाक्स और जमींदारों के पास आज भी कई कई हजार बीघे जो जमीन है—चौधरी साहब ने अभी बताया है कि पिल्लों और घोड़ों तक के नाम पर जमीन है—कानूनी व्यवस्था कर के उस जमीन को गरीबों में बांट दिया जाए। राजस्थान में राजा-महाराजाओं की प्रथा थी, जागीर-प्रथा थी। कांग्रेस ने उन दोनों प्रथाओं को समाप्त किया और राजाओं-महाराजाओं तथा जागीरदारों की जमीन को गरीब किसानों में बांटने की व्यवस्था की। इस स्थिति में जागीरदारों और सामन्तों में इस के प्रति रोष होना स्वाभाविक था।

MR. CHAIRMAN: I hope you will continue next time. The House will take up half-an-hour discussion.

18.13 hrs.

HALF-AN-HOUR DISCUSSION CLOSURE OF KOTA ATOMIC POWER STATION

श्री वृद्धि चन्द्र जैन : (वाड़मेर) : सभापति महोदय, मैंने 15 दिसम्बर, 1980 में कोटा अणु बिजलीघर की इकाइयों की अव्यवस्था के बारे में आध घंटे की चर्चा उठाई थी और राज्य मंत्री जी ने, जो सदन में विरजमान हैं, उसका जवाब दिया था। पहले मैं उनके जवाब की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ :—

“I am grateful to the hon. Member for consistently bringing up this subject. Whatever be the problems this plant may have had I

can assure the hon. Member that they have been worked out but the system of the grid of Rajasthan will have to be rectified and modernised because fluctuations in our frequencies take place. That is beyond the control of the atomic plant.”

मंत्री महोदय ने यह जवाब 15 दिसम्बर 1980 को दिया गया था। उसके बाद प्रथम इकाई, जिसके बारे में मैंने विशेष ध्यान आकर्षित किया था, उसकी ओर भी अधिक दुर्गति हुई है। मैंने इस सम्बन्ध में 24-12-82 को प्रश्न पूछा था। इकाई नं० (1) 300 डेज में 198.6 डेज बन्द रही। जो जानकारी उत्तर में दी गई है उसका मैं उल्लेख कर रहा हूँ। कोई भी महीना ऐसा नहीं रहा जबकि यह इकाई बन्द न रही हो। सन् 1981 में 18 आउटजेज, ब्रेकडाउन्स हुए हैं।

इकाई नं० (2) की स्थिति भी अच्छी नहीं रही है। अब स्थिति यह है कि एक महीने से वह भी बराबर बन्द है। कोई भी ऐसा महीना नहीं रहा जबकि इकाई नं० (2) बराबर चली हो। उसमें बार बार आउटजेज और ब्रेकडाउन्स होते रहे हैं।

मेरे कहने का मतलब यह है कि जब इस प्रकार से हमारे अणु बिजली घर चलेंगे तब किस प्रकार से काम चलेगा। राजस्थान की स्थिति तो और भी ऐसी है जिसमें वह अणु बिजली घरों पर अधिक निर्भर करता है। हमारे राजस्थान की इंस्टाल्ड कैपेसिटी जो है 1140 मेगावाट है उसमें 440 मेगावाट की कैपेसिटी अणु बिजली घरों की है। जहाँ 45 प्रतिशत बिजली की आपूर्ति इन अणु बिजली घरों से हो और उनकी ऐसी दुर्गति हो रही हो तो उस राजस्थान

प्रान्त की दुर्गति भी होनी ही है । किस प्रकार से हमारा राजस्थान प्रान्त प्रगति कर सकेगा ? हमारे राजस्थान में चार साल से अकाल की स्थिति है जिसको बिजली आपूर्ति में होने वाली कमी ने और बिकाल रूप दे दिया है । हमारे प्रदेश के अधिकांश उद्योग ठप्प पड़ गए हैं । बिजली की कटौती भी काफी लागू की गई है । नान-प्रायर्टी सेक्टर में तो सौ परसेन्ट तक कटौती की गई है । प्रायर्टी सेक्टर्स में 70 परसेन्ट की कटौती लागू है । एग्रीकल्चर सेक्टर में अगर चार घण्टे बिजली मिलती भी है तो केवल रात में । 50 परसेन्ट की कटौती एग्रीकल्चर सेक्टर में की गई है । आज इस प्रकार की स्थिति राजस्थान प्रदेश में है । इस प्रकार की स्थिति के चलते राजस्थान प्रदेश की रेवेन्यूज़ पर भी अन्तर पड़ता है । आज की स्थिति में सब से ज्यादा ओवर-ड्राप्ट राजस्थान का ही है — 324 करोड़ का । आज अगर वहां पर उद्योग धंधे नहीं चलेंगे तो किस प्रकार से राज्य सरकार की रेवेन्यू बढ़ सकेगी ? किस प्रकार से सेल्स टैक्स की आमदनी हो सकेगी ? इसी तरह से अगर एग्रीकल्चर प्रोडक्शन होगा तो प्रदेश की रेवेन्यूज़ कैसे बढ़ेंगी ?

आज हमारे ऊपर यह इल्जाम लगाया जाता है कि यह सब ग्रिडफ्लकचु-एशन्स के कारण हो रहा है लेकिन यह बिल्कुल सही नहीं है । आपका डिपार्ट-मेन्ट आपको धोखा दे रहा है । आज अणु बिजली घर कंपरेटिवली, थर्मल प्लान्ट से ज्यादा यूज़फुल साबित हो सकते हैं बशर्ते कि वह अच्छी तरह से चल सकें लेकिन वह अच्छी तरह से चलते ही नहीं हैं । आज राजस्थान प्रदेश तो वैसे ही सारे देश में सबसे अधिक पिछड़ा हुआ है

और उसमें भी जिस क्षेत्र से मैं यहां पर आता हूं, वह और भी अधिक पिछड़ा हुआ है । वाढमेर जैसे क्षेत्र में ग्रामीण जलप्रदाय योजनायें विद्युत् के सहारे चलती हैं । विद्युत् के बन्द होने से हमको पीने का पानी नहीं मिलता है । ग्रामीण क्षेत्रों में पीने का पानी नहीं मिलता है । अकाल की स्थिति की वजह से अनाज पैदा नहीं हुआ, वहां जानवरों के लिए चारा नहीं है, घास नहीं है । इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि इस प्रकार की विषम परिस्थितियां हैं और जिस प्रकार आपका डिपार्टमेंट कार्य कर रहा है । डिपार्टमेंट बतलाता है कि इन-इन कारणों से हमारा अणु बिजली घर नहीं चल रहा है ।

In some of the tubes of the moderator heat exchanger

माड्रेटर की जो फर्स्ट इकाई है, उसको आपको बदलना पड़ा है । जिसको कि आपने कनाडा से प्राप्त किया है । लेकिन आपने यह नहीं देखा कि कनाडा से अणु बिजली घर वनेंगे या नहीं और जो मशीनरी प्राप्त हुई, वह मशीनरी डिफैक्टिव मशीनरी थी या नहीं ? हमारे वैज्ञानिक यह जानकारी नहीं कर सकें कि हम जो चीज़ ले रहे हैं और हमारा अणु बिजली घर जो बन रहा है, वह इस प्रकार का तो नहीं बन रहा है जिसकी मशीनरी काम की न हो ।

The causes for the outages were due to various reasons including grid disturbance, equipment failures and human errors, and also

1. Micro leaks in some of the tubes of the moderator heat exchanger.
2. Turbine blade failures.
3. Sensitive protective system.
4. Minor leaks in the valves.

[श्री वृद्धिचन्द्र जैन]

5. Turbine generator (Second circuit).
6. Cooling water leakage problem.
7. Leakage in the tubes and reactors.
8. Tripping again and again.
9. Mal-function of control system led to reactor trips.
10. Rajasthan Grid system.

आपकी प्रथम इकाई चार महीने— अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर और जनवरी—बिल्कुल बन्द रही। उसको ठीक करने का प्रयास तो किया, फिर वह आठ दिन चली और आज वह बन्द है। दोनों इकाइयां आज बन्द है। उधर हमारे राजस्थान के मंत्री ने आश्वासन दिया है कि हम चार घण्टे से छः घण्टे बिजली बढ़ा देंगे और अब यह आश्वासन कैसे पूरा होगा? मैं आपको आज के दिन यह जानकारी दे रहा हूँ कि दोनों बिजली घर आज बन्द हैं। इन परिस्थितियों में आगे हम कैसे बढ़ सकते हैं, कैसे हम आगे तरक्की कर सकते हैं। इसी सम्बन्ध में राज्य सभा में भी तीन दिसम्बर को सवाल उठाया गया था। वहाँ पर भी आपका ध्यान आकर्षित किया गया था, परन्तु इस सम्बन्ध में कोई भी तरक्की, कोई भी प्रोग्रेस नहीं हुई है। इन दोनों इकाइयों के बन्द होने से एक अनिश्चितता की स्थिति बनी हुई है। इस अनिश्चितता की स्थिति को ठीक करने के लिए, मेरा सुझाव है कि आप इस सम्बन्ध में एक हाई-पावर टेक्निकल कमेटी बनायें, जो यह विचार करे कि ये त्रुटियाँ क्यों होती हैं। वह इस सम्बन्ध में पूरी रिपोर्ट दे और फिर उन इकाइयों को ठीक किया जाए।

प्रथम इकाई के बारे में मैं कह सकता हूँ कि हस बारे में इतना अनुभव कनाडा

को भी नहीं है और दूसरी इकाई तो आपने तैयार की है, वह भी एक महीने से बन्द है। क्या आप इस सम्बन्ध में जानकारी देने का कष्ट करेंगे? इस सम्बन्ध में पहले भी मैंने मंत्री महोदय से अनुरोध किया था कि वे खुद जाकर मौके पर देखें कि वहाँ क्या खराबी है। क्या वहाँ वैज्ञानिकों की कमजोरी है, कर्मचारियों की कमजोरी है, क्या वहाँ ऐसे कर्मचारी जो नहीं हैं, जो गैर-जिम्मेदाराना तरीके के काम करते हैं? वे वहाँ जा कर देखें और इस सिस्टम को सुधारने की कोशिश करें। मैं आप से पूछना चाहता हूँ कि क्या आप कभी भी उस सिस्टम को देखने के लिए गए, आप ने किसी भी तरीके से कोई सहयोग दिया या मदद की? इस सम्बन्ध में आपको पूर्णतया स्थिति को सुधारने की कोशिश करनी चाहिए। हमारे अणु बिजली घरों की स्थिति जिस प्रकार की है मैंने उस का विस्तार से विवरण दिया है। उस सम्बन्ध में मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि यह महकमा प्रधान मंत्री जी के अण्डर में है। जो महकमा उन के अण्डर में हो और उस की यह दुर्गति हो तो यह हमारे लिए बहुत शर्म की बात है, बहुत लज्जाजनक बात है। आज हम से ग्रामीण क्षेत्रों में पूछा जाता है—यह विभाग प्रधान मंत्री जी के अण्डर में है, फिर भी बिजली घर की यह हालत है, इस की व्यवस्था ठीक ढंग से नहीं होती है—यह हमारे लिए डूब मरने की बात है। यह हमारे लिए बहुत गम्भीर चिन्तन का विषय है और मैंने जो शब्द कहे हैं वे बिल्कुल हृदय से कहे हैं। मैं चाहता हूँ कि इस समस्या का तुरन्त हल हो तथा कुछ पर-परमानेंट साल्यूशन हो। मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि केन्द्रीय सरकार इन अणु बिजली घरों को ठीक करने

के लिए, इन को सुधारने के लिए, बजट में क्या प्रावीजन कर रही है तथा क्या व्यवस्था कर रही है? ये कब तक ठीक हो जायेंगे तथा कब तक इन का परमाण्विक सांख्यिक हो सकेगा? इन के बारे में पूरी तरह से प्रकाश डालें।

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENTS OF SCIENCE AND TECHNOLOGY, ELECTRONICS, ENVIRONMENT AND OCEAN DEVELOPMENT (SHRI C. P. N. SINGH):

Mr. Chairman, Sir, I am very grateful to the hon. Member for bringing up, once again, this issue before Parliament. He has quite rightly stated that, last year, in 1980, he had occasion to agitate this issue in Parliament by raising it as an half-an-hour discussion. I would once again like to state that the Atomic Power Reactor and its use for generation of power is not a very simple process, it is a very high technology area where we in India are proud of our scientists and technologists who have brought us to an achievement where we are as good as some of the best in the world.

The first Reactor, RAPS-I, was set up with Canadian participation, Canadian aid and Canadian machines and, as the hon. Member pointed out, that too was more or less a pilot project because the world over at that stage nuclear technology for power generation was not so very updated as it is today. This Reactor is like the Douglas Point Reactor in Canada, of the same capacity. In Canada they called it a pilot project, they did not put it on to commercial operation as we did, but we have the pressure, as the hon. Member pointed out, of power necessities for our backward regions of our States which need power to improve their lot. We put it on to commercial operation, and during the functioning we have learnt of the process also, we have learnt by mistake; and RAPS-II is an ingenuity of our Indian technologists, engineers and scientists. But this hon. House, I am sure, will appre-

ciate that there are many teething troubles in a technology area of this kind. There are explanation that we can give when there are mechanical problems as far as turbine blades go, but when it comes to the question of heat-exchangers or minor leaks of fowl and water. I am sure the House and the hon. Members will realise that this Caleandria in reactor is a tubular cement structure which is very very thick and on one side is the atomic reactor. Because of the hazards involved like atomic radiation, one cannot like a motor car get screw drivers and wrenches and open up the wheel. There are ways and means to get to it. We do not want to expose our technicians to those kinds of hazards. Sir, fortunately, we, in India, did not have even one case of serious atomic radiation which has been injurious to any of our workers working in these installations.

As you realise, to get to these areas is dangerous and can be dangerous if something goes wrong for the area where this plant is situated. I am sure the hon. Member and the House will realise that to get to these points one has to have certain tooling done outside and not in the reactor itself. We to-day have achieved and have managed to get the tooling for this kind of remote engineering or remote plugging of certain pipes.

I will not make excuses but I can assure the hon. Member and the House that we are doing our best and this, as the hon. Member pointed out, is the Prime Minister's subject and she is the Minister. But, I am sure the hon. Member is aware that some of our greatest scientific achievements, some of our technological greatness has been achieved because of her and the scientists' belief in her have prompted a confidence with which I do not think, we should play.

Sir, I am not a technocrat of that level I assure the hon. Member that I would leave it first to the technocrat but if the technocrat wanted me and the hon. Member wants me to visit Kota, I will certainly do so. But I

(Shri C. P. N. Singh)

cannot perform miracles. Those miracles have been performed by the scientists and the technocrats who are stationed there and are working to the best of their ability.

There are some figures that I would like to bring to the attention of this august House and the hon. Member because he read out certain outages that our atomic station in Kota is having. The power requirements of Rajasthan are about 15 million units per day. The Bhakra grid supplies 3.7 million units, RAPI—40 million units, RAP II—1.5 million units, Chambal—1.0 million units, the MP Electricity Board—0.2 million units and local generation—0.2 million units. Hence these two stations supply not 30 to 40 if I am right, as the hon. Member has stated but about 60 per cent of Rajasthan's power requirements.

I am sure you will appreciate the fact that this is a futuristic installation in Rajasthan. This is not an excuse but Rajasthan cannot be totally dependent on just RAP-I and II. In 1980 as I have pointed out because of the grid fluctuations, we looked into that and certain necessary improvements were carried out. But, unfortunately, as the hon. Member pointed out, we did have these very peculiar problems sometimes in the stages of development. And, they may be lessons for us for updating our research and development. It cannot be at the cost of Rajasthan's development and we have tried to keep this thought upper most in our minds.

Sir, what the hon. Member pointed out was about drought. At that stage, from 1-4-81 to 30-9-81, RAP-I and RAP-II supplied 641.3 million units.

SHRI KRISHNA KUMAR GOYAL (Kota): I think he is wrong. It requires to be corrected. Get it checked.

SHRI C. P. N. SINGH: I am stating it with a sense of responsibility. Again I am stating this with a sense of res-

ponsibility. I shall check that up if it is incorrect.

It means that during the drought periods of Rajasthan, we, at that stage in a certain way, managed to alleviate the problems that were created. But, Sir, at this stage, as the hon. Member pointed out, the agricultural and industrial loss can never be repaid. For that, I would only blame RAP I and RAP II. It may be a factor which added to the sufferings. I am sure that it was not intentional.

For the future, I would once again inform the hon. Member and, through you this august House, that with the necessary precautions, we shall try and see that the optimum generation of RAP-I and II is maintained. I hope the hon. Member is right in his agitation. We will not give him the opportunity of saying that we did not do our best.

MR. CHAIRMAN: He wanted to know by what time it would be set right.

SHRI C. P. N. SINGH: Sir, if a particular atomic reactor which is generating power is to put out on planned out, it takes a minimum of six to eight weeks to get back to the grid.

This is where, with all humility, I would like to remind the hon. Member and the House that pressures, the economic pressures and the low generation of power are the reasons that we do not have planned outages for long enough. If we want to go out on an outage of a plant, for eight weeks or more than that, we cannot do it because the pressures are there to get back to the grid as soon as possible.

Now, this is where with all humility, I would like to remind the hon. Member and the House that the pressures, and the low generation of power are the reasons that we do not have planned outages for long enough. If we want to come out on an outage on a plant for eight weeks—more than that we cannot do so,

the pressures are to come back within fifteen days or within twenty days from all the concerned departments.

This is the pressure under which our engineers and scientists are working. They are also Indian and, I do not think, we should blame them. But, the pressure of coming back on the grid has always been one of the factors by which we have not been able to have an outage as long as planned. Thank you Sir.

श्री सत्यनारायण जटिया (उज्जैन) :
सभापति जी यह एक बहुत महत्वपूर्ण मसला है कि हम अपने देश का उत्पादन बढ़ाएं। उस के साथ साथ जो आज की आवश्यकता है, और इस उत्पादन वर्ष की बात है, उसकी पूर्ति के लिए जो सबसे जरूरी स्रोत है, एनर्जी, उसको आज राजस्थान में बहुत कमी है। राजस्थान में आज चारों तरफ अन्धकार है। वहां बिजली नहीं है और बिजली न होने के परिणामस्वरूप औद्योगिक उत्पादन के लिए और सिंचाई कार्यों के लिए जितनी बिजली चाहिए, वह नहीं मिल रही है। उसके कारण किसानों की खेती बर्बाद हो रही है, घरेलू उद्योग धंधे उसके कारण प्रभावित हुए हैं। हम हर वर्ष को किसी न किसी रूप में मनाते हैं। महिला वर्ष मनाया गया, विकलांग वर्ष मनाया गया, बाल वर्ष मनाया गया और इस वर्ष को उत्पादन वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है जब कि ऊर्जा की स्थिति विकलांग सरीखी है। मैं यह नहीं कहता कि इस तरह से वर्ष नहीं मनाए जाने चाहिए, लेकिन ऊर्जा उत्पादन की स्थिति काफी गंभीर है, इसलिए मेरा कहना है कि यह जो एटामिक पावर प्रोजेक्ट है, इसमें जो दो यूनिट कमीशन हुए हैं उनमें उत्पादन कम होता गया है। 1979-80 में 12513.5 लाख यूनिट उत्पादन हुआ। 1980-81 में

10482.9 लाख यूनिट उत्पादन हुआ। 1981-82 में 5041.3 लाख यूनिट उत्पादन हुआ। इससे पता चलता है कि उत्पादन निरन्तर गिरता गया। दूसरे यूनिट की भी यही स्थिति रही।

सभापति महोदय : प्रश्न पूछिए।

श्री सत्यनारायण जटिया : सभापति जी, महत्वपूर्ण मामला है। जो हैवी वाटर उपयोग किया जाता है एंड ए मॉडरेटर और हमारे यहां कनेडियन डोटेरियम यूरेनियम प्रेस्क्रीब्ड हैवीवाटर मॉडर्निटर एण्ड कूल टाइप रिएक्टर लगाए गए हैं। हमें गर्व है कि यहां पर जो यूरेनियम उपयोग में लाया जाता है वह देशी है। लेकिन यहां पर जो हैवी वाटर उपयोग किया जाता है, उसकी तादाद काफी है और उसकी एक किलो की कीमत 3000 रुपए होती है। अभी पिछले दिनों तीन टन हैवी-वाटर रिस्क गया था जिससे देश को एक करोड़ रुपए की हानि हुई थी। मैं जानना चाहता हूं कि क्या इस तरह से हमारे वैज्ञानिकों को हतोत्साहित तो नहीं किया जा रहा है। हमारे यहां नई टेक्नालाजी का विकास हो रहा है, इसमें समय लगगा, लेकिन इस तरह से ये जो यूनिट बार-बार खराब हो जाते हैं, यह स्थिति स्पष्ट होनी चाहिए। उत्पादन प्रभावित हो रहा है। आपको पता होगा यूनिटों के बन्द होने से 440 मेगावाट की एक साथ कमी हो जाती है और इतनी कमी आ जाने पर किसी प्रदेश में कोई काम करने की गुंजाइश नहीं रह जाती। इस तरह से हमारा मंत्रालय इस स्थिति में किस तरह से सुधार करेगा, यह मैं स्पष्ट रूप से जानना चाहता हूं, जिससे राजस्थान को विद्युत, संकट की स्थिति से उबारा जा सके।

श्री राम विलास पासवान (हाजीपुर) : माननीय सभापति महोदय, यह बहुत गम्भीर मामला है और लोगों के जनजीवन से संबंधित है। मैं चाहता था कि जब दूसरी बार हाफ एन आवर डिसकस हो रहा है तो प्रधानमंत्री जी को स्वयं रहना चाहिए था। पिछली बार की प्रेसीडिंग देखी और तब से जो जवाब आ रहे हैं उन सब में एक ही चीज कही जाती है कि सरकार इसके सुधार के लिए कार्यवाही कर रही है और प्रयत्न कर रही है और जितने आप प्रयत्न कर रहे हैं उतने ही आप पीछे भागते जा रहे हैं। अभी जिस प्रश्न के संबंध में जवाब दिया गया है, हाफ एन आवर डिसकशन है, उसमें देखिए कि अप्रैल से सितम्बर तक 11 दिन तक यूनिट बंद था। अक्टूबर में आकर 31 दिन बंद रहा। नवम्बर में 30 दिन बंद रहा, दिसम्बर में 31 दिन बंद रहा और जनवरी 1982 में 29 दिन बंद रहा। अब जवाब में ये कहते हैं कि दोनों यूनिटों को समय-समय पर उपकरणों से संबंधित समस्याओं का सामना करना पड़ा। इसके समाधान के लिए आवश्यक कदम उठाए गए हैं। आवश्यक कदम पहले भी उठाए गए थे और 28 नवम्बर 1981 को प्रश्न के जवाब में भी यही बताया गया था, उसके बाद स्थिति 31 दिन के बन्द तक पहुंच गई। अभी मेरे साथी ने जो कहा कि डूब कर मरना चाहिए, मैं तो कहता हूँ कि चुल्लू भर पानी में डूब कर मरना चाहिए। यह हालत है। कदम क्या उठा रहे हैं। यूनिट को बंद करने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं।

आज यह सबसे लेटेस्ट टेक्नालाजी है और इसी पर भरोसा किया जा सकता है। क्योंकि पनबिजली के ऊपर भरोसा नहीं है, क्योंकि सूखा पड़ जाता

है। थर्मल पावर के लिए कोयला अच्छा नहीं मिलता, केवल यही लेटेस्ट टेक्नालाजी है जिसमें न सूखे का डर रहता है न कोयले का डर रहता है। इससे बढ़िया तरीके से काम चलता रह सकता है। आप परमाणु बिजली पर ही भरोसा करना चाहते हैं। यह भी 31 दिन में 31 दिन और 30 दिन में 30 दिन गायब रहे तो क्या कदम उठाये जा रहे हैं यह महत्वपूर्ण हो जाता है। इस महत्वपूर्ण सवाल पर जब चर्चा हो रही है तो मैं समझता हूँ कि प्रधानमंत्री को स्वयं आकर इस पर प्रकाश डालना चाहिये था और देश को और सदन को इसके बारे में आश्वस्त करना चाहिये था।

देश में कितने मैगावाट की टोटल कैपेसिटी है, कितने मैगावाट की आवश्यकता है और कितने मैगावाट जेनरेट हो रही है और भविष्य में कितने मैगावाट की जरूरत होगी यह भी पता चलना चाहिये। 21 जनवरी 1981 को सेठना साहव का एक लेख छपा था - जिसमें उन्होंने लिखा था कि भूत में मैं कर रहा था, वर्तमान में मैंने कितना अचीवमेंट किया है और आने वाले दस वर्षों में मेरी योजना कितने हजार मैगावाट बिजली तैयार करने की है।

मैं आप से पूछना चाहता हूँ कि देश की टोटल कैपेसिटी क्या है, जितनी जेनरेट होती है, कितने मैगावाट की आवश्यकता है और दस साल के लिये आप ने कोई योजना बनाई है तो वह क्या है ?

नवम्बर महीने में प्रधानमंत्री के जवाब में तीन बातें बताई गई थीं। एक तो उपकरण इसका कारण बताया था, दूसरे सही ढंग से काम का न होना और मानवीय भूल। मैं जानना चाहता हूँ कि जो उपकरण आप लेते हैं क्या उनके बारे में कोई एग्जिमेंट आप नहीं करते हैं, कोई गारंटी नहीं लेते हैं। कनाड

से आपने एग्रीमेंट किया। तब क्या कोई गारंटी ली गई थी कि कितने साल इसकी गारंटी है? यदि उस अर्से में वह सामान या उपकरण खराब हो जाता है तो क्या उस गारंटी के मुताबिक आप उसको रिटर्न कर सकते थे या नहीं? मैं यह भी जानना चाहता हूँ कि उपकरण जो खराब हो गये हैं क्या उसको लेकर आप ने कनाडा सरकार से कोई मुआवजे की मांग की है?

आपने जनवरी के महीने तक का फिगर दिया है। यह 24 फरवरी का उतर है। आपने उसमें कहा था कि मैं समाधान के लिये आवश्यक कदम उठा रहा हूँ। मैं जानना चाहता हूँ कि फरवरी महीने की आप की प्रगति की रिपोर्ट क्या है? फरवरी महीने में कितना उत्पादन हुआ है, कितने दिन तक बिजली घर बन्द रहा?

श्री कृष्ण कुमार गोयल (कोटा) : माननीय सदस्यों ने जो बातें उठाई हैं उन में मैं अपने आप को शामिल करता हूँ और उनको दोहराना नहीं चाहता। आर० ए० पी० पी० मेरी जो कोटा कंस्ट्रिक्ट्यूएन्सी उसके सब से नजदीक है। कंस्ट्रिक्ट्यूएन्सी वह दूसरी हो जाती है लेकिन मेरे वह सबसे नजदीक है।

मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि मंत्री जी ने बहुत ईमानदारी के साथ ये जो दो यूनिट हैं, उनकी फंक्शनिंग के बारे में, उसकी कम-जोरी के बारे में ब्यान दिया है और ईमानदारी से स्वीकार किया है। पहली बार उन्होंने ऐसा किया है। उन्होंने कहा है कि दोनों यूनिटों की जो हमारी स्टेज हैं वह अपडेटिंग और रिसर्च की है। इसके बाद अन्य बातें कहना अपने आप में निरर्थक हो जाता है। अभी तक तरह-तरह के एक्सक्यूज दिये जाते थे। दोनों यूनिटों के फेल होने पर तरह-तरह के एक्सक्यूज दिये जाते थे। जहां तक ग्रिड फ्लक्चुएशन का सवाल है, मैं इतना ही कहना

चाहता हूँ और मैं चाहता हूँ कि आप अपने स्तर पर इसकी और जांच करा लें कि राजस्थान इलैक्ट्रिसिटी बोर्ड ने इस आरोप को बिल्कुल स्वीकार नहीं किया है कि आर० ए० पी० पी० की खराबी ग्रिड के अन्दर फ्लक्चुएशन की कमी या ज्यादा होने के कारण होती है। मंत्री महोदय को भी इसको स्वीकार कर लेना चाहिये। दोनों यूनिटों के अन्दर क्या डिफैक्ट है किस समय होता है, इसको उनको देखना चाहिये। इस चीज को मंत्री महोदय ने सीव शब्दों में तो स्वीकार नहीं किया है लेकिन दबे दम इसको जरूर माना है कि खराबी का कोई दूसरा कारण है। मैं जानना चाहता हूँ कि क्या यह सही है कि जिस समय ये दोनों यूनिटें फंक्शन करते हैं तो रेडियो एक्टिविटीज के अन्दर जब इरेगुले-रेटीज होती हैं, कोई डिफैक्ट जिस समय आता है और ब्रेक डाउन होता है तो किसी भी यूनिट को उस समय खोला नहीं जा सकता है? जब रेडियो एक्टिविटी सभाइड हो जाती है उसके बाद ही उस रोऐटर को आप खोल सकते हैं। इसलिए क्या यह सच है कि इन हालात में तुरन्त ब्रेकडाउन के बाद इन रिएक्टर्स को न खोले जाने के कारण आप पता नहीं लगा सकते किन कारणों से ब्रेकडाउन हुआ है, क्या फैक्ट है?

हमारे देश में या विदेशों में जितने भी एटामिक पावर प्रोजेक्ट काम कर रहे हैं उनका अनुभव क्या है? कितने दिन तक लगातार उन यूनिट्स को बिजली प्रोड्यूस करनी चाहिये बिना ट्रक के, कितने दिनों बाद उनका मेन्टेनेंस करना चाहिये और उसमें कितना समय लगता है? इसके मुकाबले में हमारी दोनों यूनिट्स की क्या स्थिति है?

क्या यह सही है कि आज तक इन रिएक्टर्स में से किसी भी यूनिट ने 15 दिन तक रेगुलर

[श्री कृष्ण कुमार गोयल]

काम नहीं किया है ? हर 7, 8 दिन में ब्रेकडाउन हुआ है ?

जो लीकेज आफ हैवी वाटर है और जो डर है कि रेडियो एक्टिविटी चम्बल में न चली जाय जिसका पानी के नीचे आने वाले इलाके में पीने के काम में आता है क्या इस खतरे के बारे में पूरी सावधानी बरती है ?

आप ने यूनिट नं० 1 में क्या-क्या डिफैक्ट्स थे, मशीनरी में या टरबाइन में वह तो बता दिये, लेकिन यूनिट नं० 2 में अब तक कौन-कौन से डिफैक्ट्स आप की नालिज में आए हैं और उन्हें कहां तक ठीक किया है ? और क्या यह भी सही है कि यूनिट नम्बर 2 के फ़ैब्रिकेशन का काम लारसन और टूबरो ने किया है । क्या यह सही है कि इनके खराब काम के कारण ही यह ब्रेकडाउन हुआ है ?

श्री रामावतार शास्त्री (पटना) : पहला सवाल तो यह है कि मंत्री जी ने उपस्करों की खराबी की बात कही है और लगभग एक साल में आप उसको दुरुस्त नहीं कर सके हैं बल्कि स्थिति खराब ही होती जा रही है । तो कोटा अणु विजली घर में इस खराबी की वजह से सरकार को आमदनी में कितनी क्षति हुई है अब तक ? आप ने विजली घर में 324 करोड़ की पूंजी लगाई है तो उसके बाद इन उपस्करों को ठीक-ठाक करने को या और आवश्यक सामग्री जुटाने में आपको कितनी धनराशि खर्च करनी पड़ी है ?

यह भी आप बतायें कि इस विजली-घर की खराबी की वजह से जो उपभोक्ताओं को क्षति पहुंची है जिसमें मुख्य रूप से उद्योग धंधे और किसान हैं, इसके बारे में कुछ अंदाज हमें दे सकें तो बड़ी कृपा होगी ।

तीसरे वहां जो मजदूर काम करते हैं उनकी अभी क्या स्थिति है ? क्योंकि कारखाना

तो बन्द है, आप इनको बैठा कर पैसा दे रहे हैं कि नहीं ? क्या स्थिति है ?

जनरल सवाल के रूप में यह पूछना चाहता हूं कि अणु विजली घर के स्थापना के बारे में सरकार की अभी क्या नीति है, ताकि हमें यह मालूम हो कि आप विजली के उत्पादन के लिये इस प्रकार के साधन का कहां तक इस्तेमाल करना चाहते हैं ?

SHRI C. P. N. SINGH: Mr. Chairman, Sir, I am grateful to the hon. Members, who have brought forward here these questions and have also participated in something which is not only relevant, but important to the development of our country.

Some pointed questions were asked by the hon. Members, Shri Goyal and Shri Paswan. I would like to answer their questions first.

The hon. Member from Rajasthan wanted to know, whether there was some specific problem within the atomic RAPP II, which has been designed and fabricated in India, and whether the suppliers of the equipment had supplied substandard materials. I would like to state that as far as possible, in every department, as the hon. Member is aware, Government has certain procedures and I am sure, those procedures do not stipulate substandard material. However, when things begin going wrong, various motives are attributed. But as initially, the hon. Member from Rajasthan, Shri Jain said, I assure the House that the Committee of technical people will definitely look into what the problems are. Shri Sethana has reached Kota and whatever is possible and whatever the Government can do, we will do our best.

The other questions were about the future plan of power generation as far as the atomic energy programme goes. At present the operational capacity is 860 megawatts, under construction is 1410 megawatts, that is about

2270 megawatts. And by the year 2000; 10,000 megawatts would be generated by the atomic stations.

The hon. Member, Shri Shastri, is always worried about labour and he asked me a similar question in 1980 during half-an-hour discussion raised at the request of Shri Jain and I would reply as I did in 1980. If the labour were not happy, they would have been on strike, as they were during 1977-78. After 1980 fortunately, the labour relations not had any excellent and we have not had any labour problem of the degree that we faced during 1977-78. I am sure, the hon. Member is aware of that.

19 hors

श्री राम विलास पासवान (हाजोपुर): सभापति महोदय, मैंने एक सीधा सा प्रश्न पूछा था कि कनाडा के साथ किए गए एग्रीमेंट के अन्तर्गत कोटा एटामिक पावर स्टेशन के लिए जो सामान आया था, क्या उसकी कोई गारंटी थी; अगर थी, तो कितने समय के लिए थी, और उसमें जो खराबी आई है, तो क्या उसके सम्बन्ध में कनाडा सरकार से बातचीत हुई है और क्या सरकार ने मुआवजे की मांग की है।

श्री कृष्ण कुमार गोयल : मैं जानना चाहता हूँ कि देश में और विदेशों में एटामिक पावर प्राजेक्ट्स में रीएक्टर को रेगुलरली विदाउट ब्रेक कितने घण्टे तक काम करना चाहिए और उसके मुकबले में वे हमारे यहां कितना काम कर रहे हैं।

MR. CHAIRMAN (SHRI CHINTAMANI PANIGRAHI): No, Mr. Goyal. Kindly don't reply to Mr. Goyal's question.

SHRI C. P. N. SINGH: I think there is a misconception. The atomic

generation part of the reactor and the turbine, are two different stages of power generation. As I stated earlier this is a prototype. It was used as a pilot project and not commercial, known as the Douglas point reactor in Canada. It was at a stage when they were also new in the field of atomic power generation. Today those developed reactors are known as Picketing Reactors, which are of 500 Megawatt generation capacity. We similarly are doing the same with our future plants at Madras or Narora. That is not really correct to say that this particular plant was outmoded or that it was not in keeping with specifications that had been agreed upon in the agreement.

ARREST OF MEMBER

MR. CHAIRMAN: I have to inform the House that the following communication, dated 5th March, 1982, addressed to the Speaker, Lok Sabha, has been received from the Deputy Commissioner of Police, New Delhi district, New Delhi today:

"I have the honour to inform you that Shri Sushil Bhattacharya, Member of Lok Sabha, alongwith his other party workers voluntarily violated prohibitory orders promulgated under Section 144 Cr. P.C. on Dr. Rajender Prashad Road and Jana Path crossing towards Shastri Bhavan at about 3.30 p.m. on 5-3-1982. He along with others, has been arrested in case FIR No. 109, dated 5-3-1982 under Section 138 I. P. C. Police Station Parliament Street, New Delhi. He is being produced before the Metropolitan Magistrate."

19.02 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Monday, March 8, 1981/Phalgunā 17, 1903 (Saka).